गांवों की औरतों को संगठित करने के कुछ अनुभव

मंजू देवी

काशी विद्यापीठ खंड के 27 गांवों में ग्रामीण स्वच्छता व स्वास्थ्य शिक्षा परियोजना चल रही है। शुरू में औरतों को संगठित करने में काफी परेशानी उठानी पड़ी।

जिन गांवों में परियोजना चल रही है वहां पुरुष शहरों में मजदूरी करने जाते हैं। औरतें मुख्य रूप से खेतों पर काम करती हैं। कुछ औरतें घरों में बीड़ी बनाती हैं। अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के लोग ज्यादा हैं।

उत्तर प्रदेश में जाति के आधार पर इतना ज्यादा विभाजन है कि औरतों को संगठित करना समस्या है। उनकी एक साथ बैठक करना मुश्किल है। महिला मंगल दलों का गठन कुछ महीने पहले हो चुका था, पर उनकी अध्यक्षाओं के नामों की जानकारी भी मुश्किल थी।

कुछ ने अध्यक्षा पद रहते हुए कोई भी काम नहीं किया था। उन्हें मालूम ही नहीं था कि क्या करना है। कहीं-कहीं उन्हें यह भी मालूम नहीं था कि वे महिला मंगल दल की अध्यक्षा हैं।

3-4 गांवों में अध्यक्षाएं कार्यक्रम में बड़ा सहयोग दे रही हैं। कुओं की सफाई करा रही हैं। पानी निकास की व्यवस्था व सोखता गड्ढे बनवा रही हैं। पानी पंचायतें संगठित कर रही हैं। घरों में शौचालय की आवश्यकता के बारे में बताती हैं। गंदे पानी से पैदा होने वाली बीमारियों के बारे में बताती हैं। वे अपने को कार्यक्रम का जरूरी हिस्सा समझने लगी हैं।

छोटी जाति की अध्यक्षाएं हम लोगों के साथ जल्दी जुड़ गईं, जबकि ऊंची जाति की अध्यक्षाएं नहीं आ पाईं। एक गांव की एक अध्यक्षा की आंखों में यह बताते आंसू भर आए कि उसके घर के पुरुष उसे घर के बाहर नहीं जाने देंगे। कार्यकर्ताओं के समझाने पर भी पुरुष राजी नहीं हुए।

परियोजना का मुख्य उद्देश्य गांववासियों को पीने का साफ पानी और शौचालय की सुविधा देना है। दोनों समस्याओं से ज्यादा परेशानी औरतों को ही उठानी पड़ती है।

धीरे-धीरे कार्यकर्ताओं ने हर समस्या पर ध्यान देना शुरू किया। समस्या चाहे बीमारी हो या पति से उत्पीड़न, पानी या शौचालय, बच्चों की शिक्षा या रोज़गार आदि। इस तरह औरतें हमारे हर कार्यक्रम में शामिल होने लगी हैं। परियोजना में औरतों को मिस्त्री के काम का प्रशिक्षण दिया गया है। □